



हिंदी उपन्यास में चित्रित किसान संघर्ष (गोदान – के विशेष संदर्भ में)

नागिले मनिषा जनार्दन

(विश्वविद्यालय)

(27)

भारत देश कृषि प्रधान देश माना जाता है ! यहाँ 100% मंत्र से 80 प्रतिशत लोग खेती करते हैं! महात्मा गांधी ने किसान को देश की रीढ़ की हड्डी माना है ! पहले यह माना जाता था किसान साहस, महान है, सबसे श्रेष्ठ हैं! मगर आज हम देखते हैं की किसानों की समाज में हालत खाने-पीने का इन्तजाम करना मुश्किल होता है ! हमारी खेती बारिशपर अघारित है ! बारिश न होने के कारण से किसान भुखे प्यासे मर रहे हैं !

हिंदी उपन्यास साहित्य में चित्रित किसान संघर्ष इस विषय के अंतर्गत प्रेमचंद, लिखित, गोदान उपन्यास में चित्रित किसान संघर्ष का अध्ययन या चित्र निम्नलिखित है !

गोदान उपन्यास में होरी का परिवार इस का प्रतिनिधित्व करता है ! होरी एक किसान है जो गरीब किसानों का प्रतिनिधित्व करता है ! होरी की हालत उतनी अच्छी नहीं जो अपने बच्चों को पढ़ाया करे, पुरा करे अपने खाद्य को साकार करे ! हर एक चीज को पैसा लगता है और पैसा कष्ट करने से मिलता है ! अपने खेतों में कष्ट करने से फसल तो अच्छी आती है ! मगर किसानों का अनाज सब का सब खलिहान में हि तुला जाता है ! किसान फिर वही का वही अन्न के लिए गोदानाज हाकर जमींदारों से कर्ज उठाता है ! जमींदारों के डर से जानवरों का भुरा भी छिपाना पड़ता है ! अपने ही खेत से चुरा कर लाना पड़ता है !

गोदान उपन्यास में होरी कहता है "किसानों का जन्म इसलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाएँ और बल का धर भरे किसान एक बैल है और जुतने के लिए पैदा हुए हैं !" (गोदान पृ.क.21)

किसान एक बार कर्ज उठाता है तो उसी में डुबता जाता है ! गोदान में भी होरी भोला से अस्ती रूपये उधारपर एक गाय लेकर आता बदले में तीन मन भुस्सा भोला के जानवरों को देना पड़ता है ! उपपरसे अस्ती रूपये कर्ज रहे ! होरी के दो भाई हैं हिरा और सोभा होरी का हिरा के साथ झगडा होता है उसका गुरसा हिरा गाय पर निकालता है जहर खिलाकर गाय को मार डालता है भाग मरने के बाद दरोगा आता है घर की तलाशी लेना चाहता है ! यहाँ पर इज्जत का सवाल है ! इज्जत बचाने के लिए साहुकार से कर्ज उठाकर दरोगा से पैसा देना चाहता है, मगर गांव में, झिंगुरीसिंह, दातादिन, परेश्वर जैसे लोग किसानों का खुन चुसने बैठे हैं !

"गाय का ज हत्यारे मुखिया हैं, गरिबों का खुन चुसने वाले !"

(गोदान पृ.क.104)

हिंस कुक्रमे करके घर छोड़कर भाग जाता है पत्नी पुनीया को छोड़कर ! होरी को पुनिया का विवाह लगती है ! दूसरी तरफ गोबर होरी का जवान लडका है व भोला की विधवा लडकी



झुनिया के जाल में फसता है! और उसके साथ घर छोड़कर भाग जाता है ! गोबर के घर छोड़कर जाने से गांव में बिरादरी में दंड भरना पड़ता है ! घर में जितना अनाज रखा था व गाववाले यानी गांव के मुखिया उठा ले जाते है ! होरी हर तरफ से कर्ज में डुबता जा रहा है ! चारों तरफ से कर्तव्यार्थी के फेरे में पड़ा होरी परेशान होता है !

गोदान उपन्यास में रायसाहब जैसे लोग भी हो जो अपना दुखड़ा होरी जैसे हमदर्द से बड़के अपना अपना दर्द कम करना चाहते हैं! उपरसे अपने दर्यादिल का उदाहरण भी दे जाते है ! दुसरो को जलाने के लिए दानधर्म करते हैं ! पाप – पुण्य के फेरे से बचने के लिएतिर्थयात्रा करते है ! उनके जैसे किसान के सामने अपना दुखड़ा सुनाके मन हालका करते हैं! क्योंकि होरी उनकेबराबर का नहीं है ! उनपर हँसे तो कोई गम नहीं मगर उनके बराबर के लोग उनपर हँसे तालिया बजाए तो दूख होता है !

होरी का देटा गोबर जब घर छोड़कर भाग गया तब झुनिया नामक लडकी यानी गोबर की प्रेमिका पेट से है ! झुनिया गोबर के घरआकर रहने लगी यह देखकर सारा गांव होरी मेहतों को कोरना लगा झुनिया अपनी बिरादरी से नहीं है उसे घर में क्यों रख लिया ! अब होरी को दो लडकियाँ है सोना – रूपा इनका विवाह करना है ! अब उनसे कौन रिस्ता करेगा उनका विवाह कैसे होगा अब चिंता होरी को परेशान कर रही है ! गोबर का पता नहीं यह सारी परेशानीहोरी के जीवन में एक साथ आती है ! गोबर की गलती को सजा पुरे किसान परिवार को मिलती है ! होरी को गाँव पंचायत में बुलाया जाता है उसपर दंड बिठाया जाता सौ रूपये नकद और तीस मन अनाज ! इसपर एक किसान पत्नी तितामिल कर कहती है ! धनिया भरी सभा में रूंधे हुए कंठ से बोली— पंचा मन्त्र को सतार सुख न प्राजोगे इतना समझ लेना ! हम तो मिट जाएँगे, कौन जाने, इस गाँव में रहे या न रहे, लेकिन मेरा सराप तुमको जरूर लगेगा है ! (गोदान पृ.क.116)

होरी के पास एक मुद्दीभर अनाज नहीं था ! जो था सब खलिहान में वह पंचायत में दंड भरने का कुबूल करता और खलिहान का सारा अनाज दो ढोकर पंचो के यहाँ ढेर करता बच्चों के लिए एक भी अनाज का दान नहीं रखता कल बच्चे क्या खाएँगे इसकी चिंता प्राणों को सोखे लेती थी !

किसान यानी होरी अपने खलिहान का सारा अनाज पंचों के सामने ढेर लगाता है इसे धनिया मिलगिनकर तोली यह पंच नहीं राक्षस है पक्के राक्षस यह सब हमारी जगह जमिन छीनकर माल मारना चाहते है दंड का तो बहाना है ! (गोदान पृ.क.117)

होरी चारों तरफ से परेशान था कर्ज तो बढ़ता जा रहा था ! गाँव के दातादीन,झिंगुरीया पटेश्वरी, मोला सभी का कर्ज बढ़ता जा रहा था ! मोला ने अपनी सगाई की बात छोड़कर होरी के पैसे भंगने घर आते है पैसे न देने से बैल ले जाता है ! बैल जाने से होरी के दोनो हात कट जाते है ! खेत में बुआई हो रही थी उसी वक्त होरी का खेत किसी अनाथ अबला की तरह से सुने पड़े थे ! होरी के घर में खाने को अनाजनही था ! पुनिया उनपर तरस खाकर अनाज लाकर दिया ! खेतमें हल चलाने को बैल नहीं थे! दातादिन ने मदत की मगरआधे – आधे हिस्से होंगे ! होरी ने विचारकिया और राजी हो गया ! खेत को बाँज रखने से अच्छा है की कुछ अनाज बच्चों को मिले !



होरी के खेत में जो रोकते हैं। उसको कारखाने में भेजने का निर्णय हुआ, तो सारे कर्जदार खेत में आगने लख गुड़बाना रोख लिया। पहले हमारे पैसे दो बाद रोख तोड़ना इसपर होरी ने सबसे भरोसा किया भी दिल आनेपर वैसे दे देंगे। रोख का पैसा तो एक सौ बिस रुपये आए तो उसमें तो सौ हजार शिगुरी सिंह ने ले लिया। बचे बिस रुपये नोखेराम ने लिए होरी अपना सिर निचे करके घर गया आया और घर पर धनिया रूपा, सीना और झुनिया भी आशा से उनकी तरफ देख रही थी मगर सारा निराश है। किसे को नहीं अपने भाग्य को रो रहा था।

होरी परेशान था। खलिहान का अनाज भी नहीं रहा बैल भी नहीं रहे। खेत भी दातादिन के कर्ज में बला गया। होरी, धनिया के सामने मजुरी करने के सिवा पर्याय नहीं था। एक तरफ शयसहाय महता, मिर्जा जी जैसे लोग हैं जो मनोरंजन के लिए पैसा खर्च करते हैं। जैसे कबड्डी, दशहरा जैसे मनोरंजन खेल में पैसा खर्च करते हैं कबड्डी खेलने को लोगों को पैसा देकर बुलाया जाता है।

गोबर भी अब शहर आ गया है शहर की हवा उसे लगी है। शहर में पैसा कमा रहा है। उदाहरण सहन सहेन बड़े लोगों जैसे हो गया है। पैसे एक उठाकरके वह गांव जाना चाहता है।

उधर होरी दातादिन के खेतों में मजुरी करने धनिया, सोना, रूपा के साथलेकर जाता है। दातादिन के यहाँ कोई कामपर नहीं जाता। होरी को चार – पाँच दिनों से अच्छी तरह से खाना न मिलने की वजहसे कमजोर हो गया उससे काम नहीं हो रहा है। फिर भी दातादिन के डाटने से वह अपने हाथ बलाने लगता है। होरी का यह हाल देखकर धनिया बोला क्या थोडा भी दम न लेने देम महाराज हम भी तो आदमी हैं। तुम्हारी मजुरी करने से बैल नहीं हो गए थोडा मुड पर एक गड्ढा जाकर जाओ तो हाल मालुम हो। (गोदान पृ.क.185)

होरी खेत में काम करते- करते चक्कर खाकर गीर जाता है, सारा बदन थंडा पड जाता है। धनिया रोने लगती है, छाती पिठ – पिठकर मेरा सोना, हिरा, कहके रोती है। फिर भी होरी को होश नहीं आता। सारा गावा दातादिन के खेत में जमा होता है। होरी बेहोश है धनिया रो रही लोग समझ रहे हैं। किसीने होरी के उपर पाणी के शितडे फोके पाणी पडने से उसे थोडा होश आता है। वह धनिया बोलना है मुझे कुछ नहीं हुआ चुप हो जा। होरी को पकडकर घर ले जाकरचारपाई परसुलाया जाता है।उसी वक्त होरी का बेटा गोबर शहर सेगांव आता है। उसे देखकर सारा घर प्रसन्न होता है। गोबर शहर से पैसे कमाकर लाया है पैसों की गर्मी में वह होली के रंग भांग समीकरी तैयारी करता है।

गांव में सभी जमिदार, साहुकार, कर्जदार सभी सोंग शोभा करके दिखानेवाला था। रात को सभी कार्यक्रम हो गए शिगुरीयासिंह, पटेश्वरी, मातादिनदातादिन, नोखेराम सभी का रोल आदा कर दिया गया। सभी लोग मजा उडाने गए। सुबह को सारा खेल खत्म हुआ।

दूसरे दिन गोबर को सजा देने की तैयारी नोखेराम दातादिन करने लगे। दातादिन होरी के घर पीड़ना और खेत में मजुरी करने चलते कहने लगा होरी ने मना किया तो दातादिन मुद – समेत दो का करके मांगने लगा। इसपर गोबर ने कहाँ हम मजुर है। किसीक गुलाम नहीं। जब जी चहा मजुरी कर जब जी चहा न करे हमारी मजुरी। इसपर दातादिन विगड गया और पैसे मांगने लगा।



नोखेराम ने सभी लगान के पैसे मांगने होरी को बुलाया भेजा गया होरी ने तो लगान के सारे पैसे जमा किए थे ! मगर रस्तीद न होने पर सत्तर रूपये और लगान भरने का रहा यह बात सुनकर गोबर विस्फुट गया और नोखेराम को खडी सुनाई इसपर नोखेराम मान गया की होरी ने लगान के पैसे जमा किए हैं !

गोबर घर लौटकर पिता होरी कडवी बातें सुनाई तुम्हारा कर्ज मैं क्यों भरू तुम खड़े खोदने जाव मैं उसमें क्यों गिरू भला-बुरा कहता है !माता धनिया को भी भला-बुरा कहता है ! और घर छोड़कर धुनिया को लेकर शहर चला जाता है ! गोबर के चले जाने पर धनिया और होरी का सपना टुट जाता है ! जवान लडका घर छोड़कर चला जाता है ! फिर वही गरीबी, वही गुलामी, वही मजुरी करनी पडगी, गोबर चले जानेपर धनिया के हृदय को कोई आरं से चीर रहा है जैसे वह आपनेभावतृत्वपर रो रही है ! होरी के अँखों में आसु भर आते हैं ! बेचारा होरी आखिर बेटा भी चला गया ! राने से समस्या का हल होता नहीं यह वह अच्छी तरह जानता है! मंगल साहने मुकादम जीत लिया अमीन को लेकर आयाऔर होरी के खेत काटकर ले गया! होरी ने सोना की शादी कही कर दी और रूपा की शादी का भी प्रस्ताव आता है ! रूपा की शादी रामसेवक से करवाना है ! होरी रामसेवक से रूपये उधार लेता है ! होरी का एक सपना है एक गाय लेनी है !

शोभा एक अच्छी खबर सुनवाता है ! रास्ते का काम शुरू हुवा है ! होरी काम करने चला जाता है होरी को एक आशा है ! यह काम अब एक महिना चलेगा, तो रामसेवकके रूपये अदा करके आमीन बचानी है ! गाय लेना है! होरी काम करते - करते गिर पडता है ! उठता है पानी फिल है ! मगर उसका शरीर साथ नहीं दे रहा ! खाली पेट पानी पिये से उसे लु लग जाती है ! वह बेहोश होता है ! सारा बदन जल रहा है ! होरी बुखार में बडबडा रहा है ! गोबररूपये हो गए ! गाय जा गई, मंगल को दुध पीला दो..... धनिया तुने लाल चुनरी पहनी है ! दुल्हन बनी है ! धनिया, ... गाय कामधेनु है, देवी

होरी विष्णु प्रभाकर पृ.क.86

होरी धनिया को देखकर गाय की तमन्ना बाकी रही यह कहता है !कहा - सुना माफ करना कहना है ! और जबान बंद करता है ! गाँव के सभी महारथी जमा हो जाते हैं ! कोई कहता आम का पाणी पीलाओ, कोई कहता मैं हूँ जीभुसी देह में मलो पटेश्वरी कहता धनिया अब महतो चले गोदान करा दो, गोदान करा दो !

जिविगा रोट से बीस आने पैसेनिकालती है पत्नी के उडे हाथ पर रखती है और दातादिन से कहती है घर में खाल हैनाबछिया है न पैसा ! यही बीस आने पैसे है, यही इनका गोदान है ! यही इनका गोदान है !

संदर्भ ग्रंथ सुची

1. गोदान - मुंशी प्रेमचंद
2. गोदान समीक्षा
3. होरी नाटक रूपांतर- विष्णु प्रभाकर
4. गारती

Synthesis of Pharmaceutically Important Isoxazoles

Sanjeevan S. Gaikwad

Department of Chemistry, Bhausaheb Birajdar Senior College, Balsur Tq. Omerga 413 606, Dist. Osmanabad,
Maharashtra, INDIA

Corresponding Author: sanjivangaikwad123@gmail.com

ABSTRACT

2-acetylnaphtho [2,1-b] furan has been synthesized by literature (Stoermer & Schaffer) method. It is then converted in to a series of Chalcones on treatment with p-substituted aromatic aldehyde. (1a-f) by Claisen-Schmidt condensation. These chalcones on reaction with Br₂ in presence of methanol and glacial acetic acid gave their dibromo derivative (2a-f). This product reacts with hydroxylamine hydrochloride in pyridine and methanol respectively to get isomeric isoxazoles (3a-f) and (4a-f). The antimicrobial screening showed that many of these synthesised compounds have good activity against bacteria and fungi.

Keywords- Naphthofuran, Pyridine, Chalcones, Isoxazoles.

I. INTRODUCTION

Survey of literature revealed the important of naphthofuran derivatives as biologically, pharmacologically and industrially important molecules (1,2). The naphthofuran derivatives have been shown to exhibit cytotoxic activity. Keeping these reports in view and in continuation of all search. For more potent naphthofuran derivatives (3-5). For the biological and pharmaceutical importance of isoxazoles see: Basappa et. al (6-11). Nair and wadodkar have reported the synthesis of isomeric isoxazoles from 1-(2-furyl)-3-(2-hydroxyphenyl)-1,3-propanedione in pyridine and methanol respectively. Isoxazoles also have been synthesized from chalcone dibromide (12-13). Literature survey reveals that isoxazoles and their isomers have not been prepared. This prompted us to synthesize some isomeric isoxazoles from dibromo propane 1-one.

II. EXPERIMENTAL

Melting points were determined in open capillary method and are uncorrected. IR spectra were recorded in KBr on Bruker FT-IR (Alpha-p)¹H NMR spectra on Bruker "AVANCE 400" MHz spectrometer using TMS as

a standard, (chemical shifts in δ ppm) and mass spectrum on Shimadzu GCMS QP 5050A. Japan model-DI mass spectrometer operating at 70ev. Progress of the reaction was monitored by TLC. The entire compounds have been recrystallized from ethanol.

Typical experimental procedure for synthesis of 3-(4-hydroxyphenyl)-1-(naphtho [2, 1-b] furan -2-yl) prop-2-en-one.

Flask was charged with mixture of 2-acetylnaphtho [2, 1-b] furan (4.20 gm, 0.02 moles) (1) and p-hydroxy benzaldehyde (2.68 gm, 0.022 mol). It was stirred in ethanol (50 mL) and then potassium hydroxide (50%) (10ml) was added portion wise, keeping the temperature below 10°C throughout the addition. The mixture was kept for 36 hr at room temp., after completion of reaction, reaction mixture was poured into crushed ice and the solid obtained was filtered under vacuum. It was washed firstly with sodium carbonate solution and then with water, dried and the product was recrystallized from ethanol to afford the pure product in 60-70% yield (1a-f). Same procedure is extended for other compounds of this series by using appropriate aldehyde. Yield 78% M.P.156°C

Spectral discussion of synthesised 1-(naphtho[2,1-b]furan-2-yl)-3-(4-hydroxy) phenylprop-2-en-1-one

IR (KBr, $\nu_{cm^{-1}}$): 3310 cm^{-1} (Ar-o-H str.), 3058 cm^{-1} (-CH str. of, Ar), 1644 cm^{-1} (C=O str. in ketone), 1586 cm^{-1} (C=C str.) 1515 cm^{-1} (C=C str. in Ar), 1443 and 1359 cm^{-1} (CH₃ def.), 1153 and 1167 cm^{-1} (C-O-C str) 830 cm^{-1} (-CH str.) 747 cm^{-1} (Ar-H-oph)

¹H NMR (CDCl₃ in δ ppm): 6.35(d, 1H-CO-CH), 6.95(d, 1H, C=CH), 7.21-8.24 (complex m, 11 H, Ar-protons), 10.32 (s, 1H, phenolic-OH) proton
Mass (m/z): 314[M]⁺, 221, 195, 147, 119, 118, 91, 69, 65, 43

Synthesis of 2,3-dibromo-1-(naphtho[2,1-b]furan-2-yl)-3-substituted phenylpropan-1-one (2a-f)

A mixture of 1-(naphtho[2, 1-b]furan-2-yl)-3-phenyl prop-2-en-one (0.01 moles) (1a) was dissolved in glacial acetic acid by warming and solution was cooled. A solution of bromine in acetic acid (6.4ml 25% w/v) was added to this solution with stirring. After 15 minutes, the dibromide prepared was filtered and washed with little alcohol followed by petroleum ether to get (2a). Compounds (2 b-f) were prepared similarly from (1b-f). Yield 72 % M.P.178 °C

Table 1: Physical and characterization data of the synthesized compounds

Code	Molecular formula	Mol. weight	Yield	M.Pt. °C	Elements, % calc (found)			
					C	H	N	X
4a	C ₂₁ H ₁₃ NO ₂	311	70	220	81.01 (80.0)	4.21 (4.25)	4.50 (4.35)	-----
4b	C ₂₂ H ₁₅ NO ₂	325	72	232	81.21 (81.0)	4.65 (4.50)	4.30 (4.22)	-----
4c	C ₂₁ H ₁₃ NO ₃	327	72	238	77.05 (76.0)	4.00 (4.10)	4.28 (4.20)	-----
4d	C ₂₂ H ₁₅ NO ₃	341	74	248	77.41 (77.50)	4.43 (4.30)	4.10 (4.05)	-----
4e	C ₂₁ H ₁₂ ClNO ₂	345	71	262	72.94 (71.80)	3.50 (3.40)	4.05 (3.90)	10.25 (10.30)
4f	C ₂₁ H ₁₂ FNO ₂	329	70	270	76.59 (76.87)	3.67 (3.96)	4.25 (4.37)	5.77 (5.89)

Table 2: Antimicrobial activity of synthesized compound.

Comp	Antibacterial activity (zone of inhibition in mm)				Antifungal activity			
	<i>E.coli</i>	<i>S.typhi</i>	<i>S.aureus</i>	<i>B.subtilis</i>	<i>A.niger</i>	<i>P.chryso-genum</i>	<i>F.moneli forme</i>	<i>C.albicans</i>
4a	13	18	17	20	+ve	+ve	+ve	-ve
4b	15	19	29	23	-ve	+ve	+ve	+ve
4c	17	18	24	21	+ve	+ve	+ve	+ve
4d	15	19	31	24	+ve	+ve	+ve	-ve
4e	11	12	10	08	-ve	-ve	+ve	-ve
4f	13	10	12	22	-ve	+ve	+ve	-ve
Penicillin	19	21	33	29	-	-	-	-
Griseofulvin	-	-	-	-	+ve	+ve	+ve	+ve

III. RESULT AND DISCUSSION

In this context we have reported that the facile synthesis of different 5-(naphtho[2.1-b]furan-2-yl)-3-substituted hydroxyl phenyl isoxazole derivatives in moderate to good yields. We hope this methodology will be helpful for further synthesis of different isoxazoles derivatives for pharmaceutical use. In the antimicrobial study, filter paper, disc diffusion plate method was employed to evaluate the antimicrobial activity. The zone of inhibition was compared with the standard drug. (Penicillin for bacteria and Griseofulvin for fungi). Results are summarized in Table 2. Investigation of antimicrobial activity revealed that the compounds (4a-f) showed significant antibacterial activity when compared with standard drug penicillin. However, the compounds (4b, 4c, 4d) were found to be more potent on all the bacterial strain. Compound (4a-f) showed significant antifungal activity when compared with standard drug Griseofulvin. Compound (4a, 4b, 4c, 4d) showed good antifungal activity. This result clearly revealed the contribution of electron releasing groups on the aromatic ring in enhancing the microbial activity.

REFERENCES

- [1] V.P. Vaidya, C.S. Shreedhara, M. Gopal, M.S. Shahabuddin and P.S. Shenoy (2003), Evaluation of some novel heterocyclic compound for antifertility, antiinflammatory and analgesic activity, *Indian J. Pharm. Sci.* 65(6),580.
- [2] V.P. Vaidya, K.M. Mahadevan and H.M. Vagdevi(2003), Synthesis of novel naphtho[2,1-b]Furopyrimidine derivatives, *Indian J. Chem.* 42(B), 1931
- [3] G.K.Nagraja, M.N.Kumarswamy, V.P.Vaidya, K.M.Mahadevan (2006) Microwave assisted synthesis of naphtho[2,1-b]furan-1,3,4-benzotriazepines: A potent antimicrobial agent, *ARKIVOC* 10,211
- [4] H.M.Vagdevi, V.P.Vaidya, K.P.Latha, B. Padmashali (2006) Synthesis and pharmacological examination of some thiazolidinone derivatives of naphtho(2,1-b)furan, *Indian J. Pharm. Sci.* 68,719
- [5] B. Padmshali, V.P. Vaidya, K.M. Mahadevan, K.P. Latha(2005) Synthesis of novel angularity fused pentacyclic heterocycles of pharmacological interest. *Indian J. Chem.* 44 (B), 1446

Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

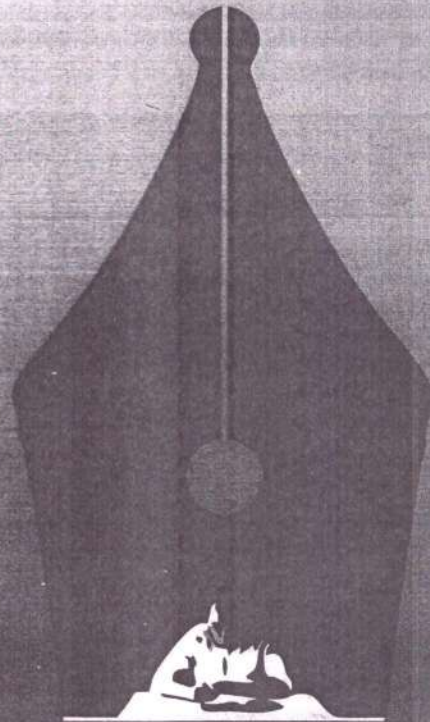
SPECIAL ISSUE

**इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य :
संवेदना के स्वर**

Guest Editor

Dr. P.K.Koparde

Dr. V.V.Arya



Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar

Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce

College, Yeola, Dist. Nashik (M.S.)



16	सुशीला टाकभौरे की कविताओं में 'स्त्री-विमर्श'	प्रा. शिवाजी रामजी राठोड - गार्वीत राकेश राजु	48
17	निम्नवर्गीय स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा : रुदाली	- प्रा.रामहरी काकडे	50
18	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी का.....	-डॉ. पुष्पलता अग्रवाल	52
19	'नारी संवेदना के विविध स्वर'(स्त्री आत्मकथ.....	- डॉ. अलका नारायण गडकरी	55
20	'क्याप' और 'नीलधारा' उपन्यास में चित्रित ---	_ ज़ेनब खान	58
21	गिलिगडु उपन्यास में अभिव्यक्त समस्याओं.....	- सावते प्रकाश नवनितराव	61
22	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री -----	_ बनजा तालदी	63
23	उपेक्षित वर्ग 'तृतीय पंथी' और डॉ.	-प्रा.सोनकाम्बले पद्मानंद पिराजीराव	66
24	नयी सदी की हिन्दी गजल में राजनैतिक चेतना	- डॉ. मृगाल शिवाजीराव गोरे	68
25	दोहरा अभिशाप दलित आत्मकथा में स्त्री.....	_ डॉ.खंदारे चंद्र	72
26	इक्कीसवीं सदी की कविता	-डॉ.राम सदाशिव बडे	74
27	पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा : किन्नर.....	-डॉ. रमेश संभाजी कुरे	76
28	उदय प्रकाश की कविता में वर्ग-संघर्ष	- डॉ. के. वी. गंगणे	79
29	इक्कीसवीं सदी के कहानियों में सामाजिक.....	- डॉ. ख्वाजी एम. के.	81
30	सुशीला टाकभौरे की कविता में संवेदना...	-कु. सरवदे संगिता तुकाराम	84
31	इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में.....	- प्रा.डॉ.चित्रा धामणे	87
32	समकालीन कविताओं में स्त्री जीवन का यथार्थ	_ मिराज	89
33	"कथा साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श"	- योगेश राणुजी कोरटकर	93
34	प्रभा खेतान के कथा-साहित्य में नारी विमर्श	- कु. मनशेट्टी लक्ष्मी	95
35	"चंद्रकांत देवताले का 'पत्थर फेंक रहा हूँ' कविता	-सुधाकर दगडू वाघमारे	98
36	"मृदुला सिन्हा के साहित्य में सामाजिक पक्ष एवं	-जोशी अश्विनी भुजंग	101
37	21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम नारी	-अफ़रोसे सुल्ताना	104



प्रभा खेतान के कथा-साहित्य में नारी विमर्श

कृ. मनशेट्टी लक्ष्मी
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नळदुर्ग

आधुनिक युग में नारी विमर्श को लेकर काफी चर्चा होने लगी है। अनादिकाल से नारी को दुख्यम दर्जा दिया गया है। पितृसत्ताक एवं पुरुषप्रधान समाज-व्यवस्था ने नारी को कई बंधनों में जकड़ दिया है। उसे केवल 'चूल और मूल'के दायरे में रखा गया है। उसे केवल भोग्यवस्तु के रूप में इस्तेमाल किया गया। उसके अस्तित्व को हमेशा नकारा जा चुका है। उसे शिक्षा, प्रगति आदि से दूर रखा गया है। घर का कामकाज करना बच्चों को संभालना और पति तथा ससुरालवाले की सेवा करना इसीमें वह बंधी गई है। अपने बारे में सोचने का उसे कतई अधिकार नहीं है। रोजमर्रा की जिंदगी में नारी केवल पिसती जा रही है। वह ऐसी जिंदगी में इतनी उलझी हुई है कि उसे स्वयं के बारे में सोचने का भी समय नहीं है। अपनी सेहत एवं सजने-संवरने के बारे में तो वह सोच भी नहीं सकती। वह केवल परिवार का बोझावात जा रही है। जिस परिवार की नींव नारी पर निर्भर है उस परिवार में उसकी कोई अहमियत ही नहीं है। परिवार में उसे घरेलू हिंसा का शिकार बनना पड़ता है। नारी की ऐसी दयनीय स्थिति केवल घर में ही नहीं है बल्कि बाहर भी है। बाहर नारी सुरक्षित नहीं है। रोजी-रोटी के लिए वह बाहर जाकर कमाती ता है लेकिन खुद को असुरक्षित महसूस करती हुई नजर आती है। नारी की इस स्थिति को कई साहित्यकारों ने अपने साहित्य द्वारा समाज के सामने रखा है। इनका उद्देश्य नारी को प्रगतिशील एवं नौकर बनाना है। वे चाहते हैं कि, नारी को भी वही अधिकार मिलना चाहिए जो पुरुषों को है। नारी और पुरुष इन दो पहिये पर ही संसार की गाड़ी आगे बढ़ती है, तो फिर दोनों के लिए अलग-अलग मानदण्ड क्या? ऐसे कई सवाल नारी विमर्श द्वारा उठाये जा रहे हैं। नारी विमर्श को लेकर कई पुरुष एवं महिला साहित्यकारों ने बहुत कुछ लिखा है। इस संबंध में निरंतर लेखन-कार्य जारी है। इनमें महिला साहित्यकारों का अहम योगदान रहा है। नारी विमर्श पर कलम चलानेवाली महिला साहित्यकार हैं-मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, सूर्यवाला, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, कृष्णा सोबती, मंजुल भगत, अलका सरावगी, सुधा अरोड़ा, मैत्रेयी दुग्गा, प्रभा खेतान, कुसुम अंसल, मेहरुनिसा परवेज, चंद्रकिरण आदि।

उपरोक्त महिला साहित्यकारों ने नारी की ज्वलंत समस्या, स्थिति आदि को प्रस्तुत किया है। नारी हृदयी होने के कारण इन्होंने नारी की भावनाओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। इन महिला साहित्यकारों में प्रभा खेतान का नाम अग्रणी से लिया जा सकता है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में नारी मन की स्थिति का चित्रण किया है। नारी की व्यथा को उन्होंने बड़े मार्मिक ढंग से उजागर किया है। नारी की संघर्षगाथा को उन्होंने सर्वथा से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

प्रभा खेतान का कथा-साहित्य नारी की हीन-दीन दशा को दर्शाया है। नारी की मनोदशा को यहां चित्रित किया गया है। प्रभा खेतान नारी होने के कारण नारी की मनोदशा को वह भली भांति जानती है। नारी की संवेदना को इन्होंने भोगा था। इसी कारण उन्होंने अपने कथा-साहित्य में नारी की संवेदना को चित्रित किया है। प्रभा खेतान कवयित्री के रूप में भी जानी जाती है। उन्होंने कविता में केवल प्रेम तथा प्रकृति-चित्रण को प्रधानता नहीं दी; बल्कि नारी की व्यथा-गाथा को भी प्रधानता दी है। नारी की दुर्दशा को दर्शाने हुए यह लिखती हैं-

"घर से जाते हुए स्कूल
स्कूल से घर वह बीस साल की हो गई।
फिर उसने एक नौकरी कर ली ;
घर से आफिस , आफिस से घर
सुबह नौ बजे जाती हुई ,
वह चालीस की हो गई। "1

यहां प्रभा खेतान ने नारी की जीवनचर्या को दर्शाया है। स्कूल जाते-जाते नारी -लड़की-बीस साल की हो जाती है। उसके उपरांत उसे जीवन यापन करने के लिए नौकरी का सहारा लेना पड़ता है।



रही है। इस उपन्यास की नायिका पैसे को महत्व नहीं देती। वह परिवार को ज्यादा तवज्जू देती है। उपन्यास की नायिका 'सोमा' मातृत्व के लिए पैसे को छोड़ने के लिए तैयार है। 'सोमा'के द्वारा लेखिका बताना चाहती है,कि आज की नारी केवल पैसे के पीछे नहीं भाग रही। उसे भी परिवार की चिंता है। 'सोमा' की जेठानी भी इस उपन्यास में आदर्श एवं उदात्त पात्र बनकर आयी है। जेठानी का पति किसी अन्य स्त्री के साथ संबंध बनाया हुआ है। जेठानी को इस बात का बुरा नहीं लगता,बल्कि वह पति को उस स्त्री के साथ स्वीकार की तैयारी दर्शाती है। इस उपन्यास में नारी के उदात्त रूप के दर्शन होते हैं। आज कहां ऐसी पत्नी है,जो अपने पति की प्रेमिका को भी स्वीकार कर सकती है। लेखिका ने इस उपन्यास में नारी के उदात्त एवं निःस्वार्थ गुणों को चित्रित किया है। नष्ट हो रही विवाह संस्था एवं पारिवारिक विघटन को गलत ठहराया है।

प्रभा खेतान ने 'अग्निसंभवा' उपन्यास में नारी की व्यथा को व्यक्त किया है। इसमें नारी जीवन की दुःखभरी दास्तान नजर आती है। साथही उसके साहस एवं कर्तव्य का भी पता चलता है। नारी यदि टान ले तो वह बहुत ऊँचाई को छू सकती है। इस कार्य के लिए उस में खुद पर भरोसा एवं हिम्मत होनी चाहिए। 'अग्निसंभवा' में ऐसी ही नारी का चित्रण है। इस उपन्यास की नायिका चीनी महिला है। वह अपने देश से बहुत प्रेम करती है। वह एक किसान की बेटी है। संघर्षशील जीवन जीने के बावजूद भी पढ़ाई जारी रखती है। पढ़-लिखकर वह हांगकांग में ब्रॉच मैनेजर बन जाती है। उससे स्पष्ट होता है कि नारी यदि चाहे तो पढ़-लिखकर उँचै पद की नौकरी कर सकती है।

प्रभा खेतान इस उपन्यास के माध्यम से बताना चाहती है कि मामूली परिवार में पलित होने के बावजूद भी हम उँचै पद की नौकरी कर सकते हैं। नारी को अपने अस्तित्व को पहचानकर आगे बढ़ना चाहिए। हमारे अंदर जो अच्छे गुण है। उसे प्रस्तुत करने चाहिए। हममें यदि अच्छे टॅलेन्ट हो तो कोई भी गरीबी या मजबूरी हमें आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती। सफलता के लिए नारी को तमाम बाधाओं का सामना करना चाहिए। तभी वह अपने वजूद को बरकरार रख सकती है।

संक्षेप में-

प्रभा खेतान के नारी प्रधान उपन्यासों का अध्ययन करने के उपरान्त संक्षेप में इतना कहा जा सकता है कि उन्हें नारी की अच्छी खासी समझ थी। नारी को समाज में किस प्रकार का बर्ताव करना चाहिए और किस प्रकार का नहीं, इस संबंध में लेखिका अपने विचारों को व्यक्त करती है। आज के युग में पढ़ी-लिखी एवं नौकरीपेशा नारी को भी काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है, इस बात की ओर वह संकेत करती है। नारी को घर में भी ब्रेलू हिंसा का शिकार होना पड़ता है। बाहर तो नारी बिलकुल सुरभित नहीं है। कभी-कभी तो वह पुरुष-नित्र को वासना का शिकार होती हुई दीख पड़ती है। यह नारी विमर्श के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है। प्रभाजी बताना चाहती है कि नारी को भी मर्यादा के दायरे में रहना चाहिए। वह दोस्तों के साथ पार्टी एँजाय कर सकती है, लेकिन शराब पीकर हंगामा करना बिलकुल गलत है। यह उसका स्वातंत्र्य नहीं बल्कि स्वैराचार है। यदि नारी की खुली सोच, खुले विचार वैवाहिक जीवन में बाधक साबित होते हैं तो अपने ऐसे विचारों पर रोक लगानी चाहिए। नारी स्वातंत्र्य का यह मतलब नहीं कि पति से तलाक लेकर अपनी मर्जी से जीवन जी ले। नारी को अपने अधिकारों के लिए लड़ना है, न ही मुक्त आचरण के लिए।

अतः प्रभा खेतान ने नारी विमर्श के माध्यम से आधुनिक युवतियों का अच्छा नर्तन दे है।

संदर्भ सूची-

- 1 अपरिचित उजाले- प्रभाखेतान-पृ क 25
- 2 अन्या से अनन्या तक - प्रभा खेतान -पृ क 56
- 3 स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार- डॉ वैषाली देशपांडे- पृ क 119
- 4 स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार- डॉ वैषाली देशपांडे -पृ क 120

Micell (SLS) Catalyzed Oxidation Reactions of Butyric and Iso-butyric acid Hydrazides by Vanadium(V)

Yogiraj Vijapure¹ and Sanjeevan Gaikwad²

¹Shrikrishna College, Gunjoti, INDIA.

²Bhauasaheb Birajdar Senior College, Balsur, INDIA.

²Corresponding Author: sanjivangaikwad123@gmail.com

ABSTRACT

The reaction between Butyric and Isobutyric acid hydrazide and Vanadium (V) is carried out in presence of a mixture of perchloric acid and sodium perchlorate. The reaction proceeds through formation of complex to give product. The various thermodynamic parameters were determined by studying the reaction at five different temperatures ranging from 30 to 50°C. Oxidation of butyric acid hydrazides by Vanadium (V) proceeds through complex formation between hydrazide and the oxidant. Free radical formation can be confirmed by effect of acrylonitrile. The activation parameters were also determined and the mechanism is predicted.

Keywords- Kinetics, Micell, Oxidation.

I. INTRODUCTION

Surface active molecules or surfactants are the substances which get preferentially adsorbed at air-water interfaces forming an oriented monolayer where the hydrophilic groups point towards aqueous phase and hydrocarbon part point towards air or oil phase.

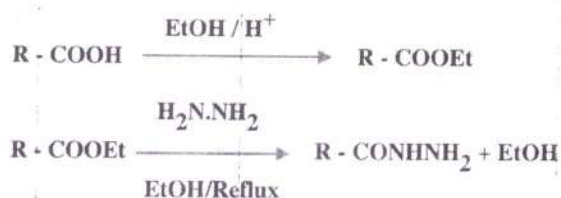
The ability of polar portion of surfactant molecule to increase the solubility of non-polar side chain can be used to estimate the contributions of solute and solvent to the observed bulk properties. The most characteristic property of a surfactant solution is the self-association of solute within a narrow concentration range in dilute solution to form high molecular weight aggregates known as MICELLES or ASSOCIATION COLLOIDS.

At extremely low concentration of surfactant, the true crystalloidal solutions are formed, but above a fairly distinct concentration, the solutions become colloidal due to aggregation of surfactant molecules.

Mild oxidising agent like ammonium metavanadate is used to oxidise organic substrates like hydrocarbons, ketones, aliphatic alcohols, aldehydes and aliphatic esters. The hydrazides selected for the kinetic study, belong to a homologous series, so that the effect of chain length on the reaction rate and on the mechanism of the reaction can be established. The hydrazides chosen for kinetic study are 1) n-Butyric acid hydrazide 2) iso-Butyric acid hydrazide.

II. EXPERIMENTAL

The experimental part includes preparation and purification of chemicals. The procedure followed for the synthesis of hydrazides is given below -



The pseudo first order reaction condition was used by keeping the concentration of hydrazide excess over that of oxidant. The progress of the reaction was followed at different time intervals by spectrophotometric measurement of absorbance due to complex formed between ammonium metavanadate and hydrazide in acid medium.

To study the oxidation of hydrazide, the reaction mixture was prepared by using requisite concentrations of ammonium metavanadate i.e. V(V), hydrazide, perchloric acid and sodium perchlorate in solution when and as required. The progress of reaction was followed by measuring optical density (O.D.) of the reaction mixture at 390 nm spectrophotometrically. λ_{max} was determined by varying wavelength, it was observed that maximum absorbance for both ammonium metavanadate and a mixture of hydrazide and ammonium metavanadate was obtained at 390 nm.

Standard Kinetic Run:

Preliminary experiments were carried out in order to decide the range of temperature, concentrations of ammonium metavanadate, hydrazide, perchloric acid and sodium perchlorate. It was found that the reaction proceeds with a measurable velocity at 35°C using 5.0×10^{-4} M ammonium metavanadate, 1.0×10^{-2} M hydrazide, 5.0×10^{-2} M perchloric acid and 5.0×10^{-2} M sodium perchlorate.

The observed rate constant (k) of the reaction was evaluated by graphical method.

It may be noted that the first order kinetics of reaction refers to change in concentration of V(V) and

Hydrazide	Temp. Coefficient	Ea KJ/mol	ΔH^\ddagger KJ/mol	ΔS^\ddagger e.u.	ΔG^\ddagger KJ/mol
n-butyric acid	1.45	65.47	59.35	-28.77	96.42
Iso-butyric acid	1.6	70.07	69.5	-23.92	100.32

Test for Intervention of Free Radical:

The free radical mechanism was confirmed by testing the reaction mixture with acrylonitrile and mercuric chloride solution. Again its already confirmed that the order of the reaction with respect to V (V) is one.

Effect of H_2SO_4

[HYD] = 1.0×10^{-2} M [NaClO₄] = 5.0×10^{-2} M

[AMV] = 5.0×10^{-4} M Temp = 35°C

λ_{max} = 390 nm

[H ₂ SO ₄] x 10 ² N	n-butyric acid k x 10 ⁵ sec ⁻¹	Iso-butyric acid k x 10 ⁵ sec ⁻¹
1.0	4.39	8.2
2.5	12.3	23.6
5.0	14.2	27.2
7.5	17.0	33.4
10.0	20.3	40.8

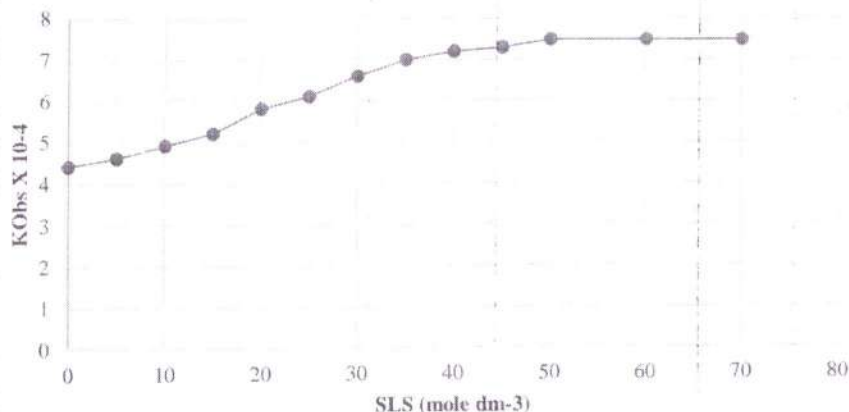
Effect of Varying SLS

Reaction conditions:

[V(V)] = 20.0×10^{-3} mol dm⁻³, [Hydrazide] = 50.0×10^{-3} mol dm⁻³,

[H₂SO₄] = 2.0×10^{-3} mol dm⁻³ Temperature = 35°C

[SLS] (mol dm ⁻³)	k _{obs} x 10 ⁻⁴ (s ⁻¹)
0	4.4
5	4.6
10	4.9
15	5.2
20	5.8
25	6.1
30	6.6
35	7.0
40	7.2
45	7.3
50	7.5
60	7.5
70	7.5



V. CONCLUSION

Review of literature revealed that anionic species are stabilized by cationic micelles, cationic species by anionic micelles and neutral molecules by nonionic micelles exhibiting catalytic effect. Micelles may catalyze or inhibit a reaction. In this study we have used an anionic surfactant, SLS, which has a catalytic effect i.e. the rate of oxidation of aliphatic acid hydrazide by vanadium(V) in presence of SLS has been enhanced. In this experiment the micelle SLS catalyses the oxidation reaction at the surface level of both the reactant.

REFERENCES

- [1] Zhengzheng, P., and Martin, N., (2007). Kinetics and Mechanism of Oxidation Reactions of Porphyrin-Iron(IV)-Oxo Intermediates. *Inorg. Chem.*, 46(16), 6767-6774
- [2] Donald, G., Huiifa, G., (1993). Kinetics and mechanism of the oxidation of alcohol by ferrate ion. *Canadian journal of chem.*, 71, 1394-1400
- [3] Keerti, M.,N., Sharanappa, T.,N., (2012). Kinetics and mechanism of oxidation of L-leucine, by alkaline diperiodatocuprate(III) - A free radical intervention,

“IMPACT OF GREEN REVOLUTION”

Dr. Dayanand Shivajirao Jadhav

Smt. Sushiladevi Deshmukh Mahila Mahavidyalay, Latur, Dist-Latur.

INTRODUCTION:-

The introduction of new agricultural technology, commonly known as the green revolution, in India is a very important aspect. The term Green Revolution was coined by William Guard 1968. The new cereals were the product of research work and concentrated plant breeding with the objective of creating High Yielding Varieties (HYV) of use to the developing countries. New varieties of wheat were first bred in Mexico in the 1950s and new varieties of rice, like IR-8 (miracle rice), at the International Rice Research Institute, Philippines in the 1960s. The increase in yield from the new seeds has been spectacular. In some cases, the yield of HYV is more than double the yield of traditional varieties.

The Green Revolution has been used to mean two different things. Some experts of agricultural geography use it for referring to a broad transformation of agricultural sector in the developing countries to reduce food shortages. Others use it when referring to the specific plant improvements, notably the development of HYV. Whatsoever, the meaning of Green Revolution may be taken the adoption of HYV of wheat and rice has been considered as a significant achievement as it offered great optimism. In fact, these varieties of seeds have revolutionized the agricultural landscape of the developing countries, and thereby the problems of poverty, hunger and undernourishment have been reduced in certain regions of the developing countries. In India, the hybridization of selected crops, i.e., maize, bajra (bulrush millet) and millets began in 1960. The Mexican dwarf varieties of wheat were tried out on a selected scale in 1963-64. Exotic varieties of paddy such as Taichung Native I were introduced in India in 1964. The diffusion of HYV, however, became fully operational in the country in the kharif season of 1965-66, in which about 17000 hectares of cultivated land was brought under HYV, especially in the Sutlej-Ganga Plain and the Kaveri Delta. The IR-5 was developed in 1967 and IR-22 in 1969, while the IR-24 was released in 1971. Subsequently, a number of new varieties of rice and wheat have been developed by the Indian agricultural scientists and adopted by the farmers of the country.

KEYWORDS: Green revolution, Irrigation, Chemical Fertilizers, HYV, Kharif, Plant protection chemicals.

OBJECTIVE:-

1) The new agricultural technology has opened vast possibilities for agricultural development in India. 2) This revolution is to address India's hunger crisis. 3) Green revolution is to do modernization of agricultural practice in rural areas. 4) To provide employment to both agricultural and industrial workers. 5) To produce strong plants which could withstand extreme climates and diseases?

COMPONENTS OF GREEN REVOLUTION:-

The main components of the green revolution in India are (a) high yielding varieties of seeds (HYV) particularly for wheat, rice, and maize, (b) abundant irrigation of water, since these crops require several watering during growth, (c) chemical fertilizers, and (d) plant protection chemicals. The subsidiary factors helping the adoption of new technology are (a) specialized agricultural

plements and machines suiting Indian conditions. (b) Credit facilities, (c) pricing policy, (d) procurement policy and storage facilities, and (e) land consolidation.

HIGH YIELDING VARIETIES OF SEEDS:

One of the most important features of the HYVS is that they can absorb much higher amount of chemical fertilizers than the local varieties. The higher doses of fertilizers in case of HYVs of seeds give higher yield. Further, the HYVs have a shorter duration of maturity and lead to the possibility of double cropping. It would be worthwhile to examine the progress of the HYV programmed in India since its inception in 1966-67.

In case of paddy, the area under HYVs of rice in 1966-67 was 34 million hectares while in 1999-2000 it rose to 45 million hectares. Its production in 1950-51 was 20.6 million tonnes while its yield was 688 kg per hectare. In 1999-2000 the production rose to 89.4 million tonnes and the yield was 1990 kg per hectare. In case of wheat, the production in 1950-51 was 6.5 million tonnes and the yield was 663 kg per hectare, while in 1999-2000, the production was 75.5 million tonnes and the yield was 2755 kg per hectare. The rise in total food grain production is spectacular. From 51 million tonnes in 1950-51, it rose to 209 million tonnes than four times over the 1950 level. In 2016-2017 the total food grain production was 275.68 million tonnes.

India has become the second largest producer of rice in the world. A significant increase in yield has been achieved fourfold in wheat and three fold in rice (the production of wheat in 1999-2000 was about 12 times over the 1950-51 level and that of rice about four times over 1950-51 level).

In rice, so far, more than 600 high yielding, early to very early maturing dwarf, disease, and pest resistant varieties have been evolved by Indian scientists. The discovery of finer varieties of HYVs like R8, IR20, and PR106 by Indian Scientists has made states like Punjab, Haryana, and eastern Uttar Pradesh, which have traditionally been wheat growing areas, to begin cultivating large quantities of rice, so much so that Punjab has become the largest producer of fine varieties of rice in India. This has become possible with the help of irrigation and migrant labour from Bihar, which is well adept in the transplantation of rice.

Wheat contributes 36 per cent to the country's food grain basket, More than 260 high yielding, disease and pest resistant wheat varieties, having good quality grains, suitable for cultivation in different agro-climatic conditions have been evolved and released for cultivation.

MERITS OF HIGH YIELDING VARIETIES:-

HYV have certain advantages over the traditional varieties of cereals which may be summarized as follows:-

1. HYV has shorter lifecycle and thereby enables the farmers to go for multiple cropping. For example, new seeds of rice and wheat complete their lifecycles in 110 and 120 days respectively. The traditional varieties of rice and wheat, on the other hand, take about 130 and 150 days respectively to harvest. The new seeds thus enable the farmers to economize on land.
2. HYV needs a lot of water for better yields. The yield per unit area is significantly high. If it is considered in terms of water required per quintal of wheat or rice, the new seeds require less water as compared to that of the traditional varieties, HYV thus economize on water also as the crop remain in the field for a shorter period.
3. HYV under optimal conditions requires more labour per unit area, and thus help in generating more employment. Prior to the introduction of HYV, the farmers over greater parts of the

country, especially in the rained areas, were exclusively dependent on the arrival of monsoon for the commencement of their agricultural activities. They used to remain unemployed during the months of summer season (May and June) after the harvest of rabi crop. But now, the farmers and the dependent laborer's get work in various agricultural operations throughout the year.

4. HYV are scale neutral which means that other things being remaining the same, the big farmers and the small farmers likely to get the production and profit in the same proportion. In other words, the new seeds are not biased towards the big or the small farmers.
5. The adoption of HYV does not require any special skill and farmers of various socio-economic and cultural backgrounds can adopt the new seeds easily. A minor adjustment in the sowing dates of wheat is required as HYV need relatively cool temperatures at the time of sowing. For example, in Punjab and Haryana, the sowing dates of wheat prior to the Green Revolution were in the third or last week of October when the day temperature used to be around 35°C, but now wheat is generally sown in the Sutlej-Ganga plain before the middle of November when the day temperature reads about 30 °C, the night temperature falls around 18°C. The farmers have, however, very well adjusted their sowing and harvesting dates on the basis of their experience during the last thirty years.

IRRIGATION:-

Another component is the adequacy of irrigation: unless there is assured water supply, HYVs cannot be cultivated profitably. A little less than three-fourths of the country's cropped area depends on rainfall which is concentrated in a few months of the year. About 70 per cent of the cultivated area has inadequate rainfall during the main cropping seasons. Intensive agriculture is difficult to practice on such lands

The future of new agricultural technology lies on one hand in evolving new varieties of seeds of wheat and rice and on the other, in making the most efficient use of irrigation supplies by minimizing losses.

FERTILIZERS:-

Fertilizer is the key input for increasing agricultural production. The consumption of chemical fertilizers during 2000-2001 was 16.59 million tons, while in 1999-2000 it was 18.7 million tons. Urea is the most commonly used fertilizer and its selling price is fixed by the Government of India. The government under the subsidy scheme paid Rs.138 billion, 128 billion, and 112 billion during the years 2000-01, 2001-02, and 2002 03 respectively, on domestic and imported fertilizers. India ranks fourth in the world in terms of gross fertilizer consumption. It is next to China, the USA and Russia. It should be emphasized that increase in production can be achieved through fertilizers. But (NKP) should be available at the right time and in the right quantities and their application depends on the types of crops and water availability.

It should be noted that the cultivated land available per capita is gradually declining. In 1970-71 it was 0.28 hectare, in 1985 it was 0.22 hectare, and by 2000 it was 0.14 hectare. Thus, there would be continuous pressure on agricultural land. In view of the rising cost of chemical fertilizers and the large amount of subsidies given to farmers it is felt that natural waste and byproducts of crops could be a good source of organic matter to increase the fertility of the soil. Waste products include animal dung, bagasse, weeds, straw, night soil, town refuse, sewage, sludge, slaughter house waste, oil-cakes, fruit and vegetable processing waste, rice husks, and seed weeds. The composting and recycling of these waste products would provide cheap and ideal organic manure to the soil.

Bio fertilizers are considered an effective, cheap, and renewable supplement to chemical fertilizers. Rhizobium has been found to be effective for pulses, and oilseeds. Blue-green algae (BGA) are effective for lowland paddy. The Government of India has established a national and several regional centers to provide bio-fertilizers.

PLANT PROTECTION CHEMICALS:-

The application of pesticides is almost universal for those areas of the country where green revolution has made an impact. The use of pesticides has become necessary to avoid the losses in crop production. The control of pests enables a crop to yield maximum production within the limitations of its environment. In the absence of such a contact, there are heavy losses in crop production.

There is another group of chemicals classified as herbicides or weedicides. These are beginning to be used in India. Just as increased use of fertilizers is an essential part of the new strategy of crop production, so is the increased use of pesticides to sustain the increased production. Even though more and more specific chemicals are being introduced for plant protection in the country, evidence is growing that chemical treatment alone may create unfavorable conditions. Chemicals, while killing a particular pest or a group of pests, may destroy the natural enemies of the pests and thereby exaggerate the situation. The hazards of environmental pollution, ill-effects of excess chemicals, and the loss of ecological balance and the consequent danger to health require use of pesticides.

The integrated pest management strategy aims at optimization of the natural controlling factors, for instance, adverse weather conditions for pests and favorable conditions for natural enemies of pests are created. Control measures are made to coincide with the most vulnerable stage of growth of pests. Integrated Pest Management has been adopted as the main plank of plant protection since 1994, as it is an eco-friendly approach aiming at the minimal use of chemical pesticides, with mere integration of other methods of control.

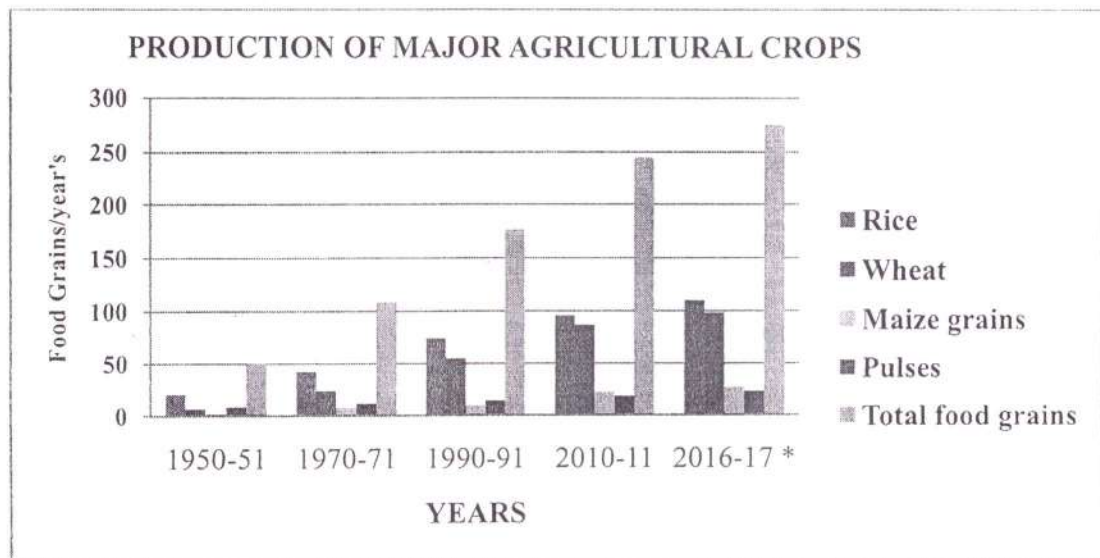
IMPACT:

The green revolution, in fact, revolutionized the per hectare productivity of wheat and rice enormously. In the pre-independence period (1900-1947) the agricultural growth rate was 0.3 per cent. In the period after independence and particularly from 1966, when the new technology was applied, along with policies of land reforms, pricing, procurement, and public distribution system, the growth rate jumped to 2.8 per cent. Production of food grains during the period increased from 108 million tonnes in 1970-71 to 176 million tonnes in 1990-91 and further shot up to 208 million tonnes in 2000. Table shows the production of various food grains in 1950-51, 1970-71, 1990-91, 2010-11 and 2016-17.

TABLE: - 1. PRODUCTION OF MAJOR AGRICULTURAL CROPS (Million Tonnes)

Sr. No	FOOD GRAINS/ YEAR'S	1950-51	1970-71	1990-91	2010-11	2016-17 *
01	Rice	20.6	42.4	74.2	95.98	110.15
02	Wheat	06.5	23.8	55.1	86.87	98.38
03	Maize grains	01.7	07.5	8.96	21.73	26.26
04	Pulses	08.4	11.8	14.3	18.24	22.95
05	Total food grains	50.8	108.4	176.0	244.49	275.68

* - 4th Advanced Estimates Source:- Directorate of Economics and Statistics, DAC&FW.

GRAPH:- 1. PRODUCTION OF MAJOR AGRICULTURAL CROPS

According to some critics, the adoption of new agricultural technology, which is capital intensive, has created regional disparities and social tensions. They argue that labour intensive, small-scale farming has received a setback and some small farmers have sold their lands and migrated to the cities and this had adversely affected the quality of life, created social tension, and added to the number of slums in the cities. The comments on the application of new technology, in fact, are not comments on the technology itself but on its faulty management. Their argument is not valid for the following reasons: (a) Bhalla and Chadha (1983) are of the opinion that the advent of green revolution in Punjab has brought overall prosperity to peasantry. It is contended that it goes to the credit of marginal and small farmers of Punjab that despite their limited land base, they have been able to record almost as much total crop output per hectare as their bigger counterparts. (b) Green revolution is capital intensive, but not to scale. Small farms, when all components are taken care of, give the same yield as big farms.

As for money, there are various agencies like cooperatives, banks, and NABARD that would help. If these are procedural circumlocutions, they should be simplified so that the farmer could get the loan at nominal interest. When the HYV of wheat and rice seeds were introduced in India, the situation was so miserable that, India was importing 2 million tonnes of wheat from the USA. It was facing a grave crisis in food production and the new technology had to be adopted.

The agricultural growth rate prior to Independence was 0.3 per cent but as a result of the new agricultural technology it has increased to about 30 per cent. India has a big reserve stock of food grains about 45 million tonnes with fluctuations and can face any eventuality like droughts and floods.

CONCLUSION:-

It should be mentioned that green revolution in India has been strengthened by the government adopting certain measures like, the procurement of food grains, pricing policy, and the buffer stock policy. It is important to note that the income disparity among the Indian farmers is not the consequence of the new technology but the unequal resource base and the faulty administration that hinders the procurement of loans, fertilizers, and pesticides and also non-availability of adequate canal irrigation water at the right time. The technology has in fact benefitted all sections of the

ation. The introduction of tube wells and tractors has not resulted in any significant replacement of labour, and even the incidence of harvester-combine has been limited to about 2 per cent of the gross cropped area in the agriculturally most progressive state of Punjab, which mainly relies on migratory labour from states like UP and Bihar. Thus, as a consequence the new agricultural technology has opened vast possibilities for agricultural development in India and the country would be able, not only to meet the domestic demand for food grains, but also for export.

REFERENCES:-

1. Jain T.R, Mukesh Trehan, Ranju Trehan (2010). Indian Economy. V.K. (India) Enterprises. Delhi
2. Mahesh V. Joshi (1999). Green Revolution and its Impact. A.P.H. Publishing Corporation. Delhi
3. Mohammed Shafi (2004 & 2006) Agriculture Geography. Dorling Kindersley (India) Pvt. Ltd.
4. Peter B.R. Hazell (2009). The Asian Green revolution. IFPRI Discussion Paper.

tal
ve,
nd
nd
in
not
of
to
ive
(b)
cen

uld
get
the
was

new
ood
and

the
the
not
tion
uate
the
0

ISSN 2349-638x
Impact Factor 5.707

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY
RESEARCH JOURNAL

PEER REVIEW & INDEXED JOURNAL

Email id : aiirjpramod@gmail.com

www.aiirjournal.com

SPECIAL ISSUE No. 45

Executive Editor

Dr. S.M. Maner

Principal

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Co-Editor

Prof. V. H. Chavan

Dept. of Hindi

Tuljabhavani Mahavidyalaya,
Tuljapur, Dist. Osmanabad (M. S.)

Chief Editor

Prof. Pramod Tandale

Sr.No.	Author Name	Title of Article / Research Paper	Page No.
42.	डॉ. उत्तम राजाराम आळतेकर	संवेदना का सरोकार कराती इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता	108
43.	प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	बाजारवाद की चुनौतियों पर चिंतन करती हिंदी लघुकथा	112
44.	डॉ. विठ्ठल शंकर नाईक प्रा. सुषमा प्रफुल्ल नामे	हिंदी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	116
45.	प्रा. डॉ. प्रवीण कांबळे	लघुकथाओं में चित्रित नेताओं की चरित्र-हीनता	119
46.	डॉ. सुनिता रामभाऊ हजारे	शिवानी की कहानी 'करिए छिमा' के संदर्भ में	120
47.	प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार	आदिवासीयों की करुण गाथा - 'अल्मा कवतरी'	121
48.	अभिनव कुमार	हुल पहड़िया: पहाड़िया आदिवासियों के चिरकालीन स्वाधीन चेतना की साहित्यिक अभिव्यक्ति	123
49.	प्रा. जे. बी. जाधव	मोहनदास नैमिशराय का उपन्यास, 'जर्म हमारे में' दलित विमर्श	125
50.	प्रा. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे	21 वें सदी के हिंदी गद्य साहित्य में बाजारवाद विमर्श	128
51.	लक्ष्मी किसनराव मनशेटी	दलित जीवन की दर्दनाक दास्तान - मुक्तिपर्व	130
52.	प्रा. प्रतापसिंग राजपूत	21 वीं सदी के उपन्यास में चित्रित किसान जीवन	133
53.	डॉ. मंत्री रामधन आडे	21 वीं सदी का हिन्दी गद्य साहित्य और स्त्री विमर्श	135
54.	डॉ. विनय सु. चौधरी	21 वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श	138
55.	प्रा. संतोष तुकाराम बंडगर	'डबल इनकम नो किड्स': महानगरीय नारी की बदलती पारिवारिक प्रवृत्तियाँ	140
56.	प्रा. सुधाकर इंडी	रमणिका गुप्ता के उपन्यासों में आदिवासी स्त्री विमर्श	142
57.	प्रा. विश्वनाथ भालचंद्र सुतार	हिंदी कविता में नारी लेखन के विविध स्वर	145
58.	प्रा. डॉ. संभाजी रामू निकम	आधुनिक परिवेश में नौकरीपेशा स्त्री के प्रति देहवादी दृष्टिकोण : 'कुत्ते' नाटक के संदर्भ में	147
59.	किरण सोपान सोनवलकर	स्त्री विमर्श का नया कोण : कस्बाई सिमोन	149
60.	संगिता तुकाराम सरवदे	नारी अंतर्मन को झकझोरती रचनाकार- कृष्णा अग्निहोत्री 'मैं अपराधी हूँ' के विशेष संदर्भ में	151
61.	सचिन मधूकर गुंड	'स्त्री जीवन का यथार्थ' :- 'मुन्नी मोबाईल'	153

दलित जीवन की दर्दनाक दास्तान – मुक्तिपर्व

शोध छात्रा : लक्ष्मी किसनराव मनशेठ्टी
क.वि.वा. महविद्यालय, नळदुर्ग
जि. उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)

आधुनिक युग में दलित विमर्श को लेकर काफी चर्चा होने लगी है आधुनिक काहलानेवाले इस समाज में अभी भी दलित वर्ग के साथ घृणास्पद बर्ताव किया जाता है। उन्हें अस्पृश्यक अछूत कहकर उनकी अवहेलना की जाती है। उन्हें कदम - कदम पर अपमानित किया जाता है। उन्हें ठुकराया जाता है। दलित वर्ग आर्थिक विपन्नता के कारण यह सब जुल्म सहन करता रहा है। सामाजिक व्यवस्था ने उन्हें हीन दर्जे का जीवन व्यतीत करने के लिये मजबूर किया है। सवर्ण वर्ग उनसे गंदे काम करवा लेते हैं। जैसे गंदगी की सफाई करना, मरे हुये पशुओं को गाव से दूर फिकवा देना आदि। आज हम पढ़े लिखे होने के बावजूद भी हम में इतनी हिम्मत नहीं है कि किसी दलित युवक युवती से दोस्ती करके उन्हें हमारे घर खाने पर बुला सकें। दलितोंको सवर्ण तुच्छ द्रष्टि से देखते हैं। वे भी मनुष्य हैं, उन्हें भी हमारी तरह जीवन जीने का अधिकार है। यह बात हम भूल गये हैं। आज भी देहांतो में दलितों के लिये मंदिरों में प्रवेश निषिद्ध है। उन्हें कुएँ पर पाणी भरने का अधिकार नहीं है। उन्हें गाव के बाहर सवर्णों की बस्ती से दूर रहना पड़ता है। सवर्णों के यहाँ नौकरी करना और रुखा - सूखा खाकर गुजर- बसर करना यही उनका जीवन है।

समाज का दलितों के प्रति द्रष्टिकोण धीरे - धीरे बदल रहा है। दलितों में सुधार लाने का कार्य सर्वप्रथम महात्मा ज्योतिबा फुले, राजर्षी शाहू महाराज तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने किया है। इनके कारण दलितों में चेतना जाग्रत हुई। दलित वर्ग भी अपने अधिकारोंके लिये संघर्ष कर रहा है। उनमें एक चेतना जाग्रत हो गयी है। इसी चेतना को हम 'दलित चेतना' कर सकते हैं। दलित चेतना का तात्पर्य है - अनुमूचित जाति के लोगों में अन्याय शोषण, वर्गभेद, जातिभेद के विरुद्ध चेतना जाग्रत करना। अशोक तिवारी के अनुसार - "दलितका तात्पर्य समाजके उस पद दलित वर्गसे है जिसे सदियोंसे 'अच्छूत' कह कर उपेक्षित किया गया। हर प्रकार से उसका शोषण किया गया। उसे कोई अधिकार नहीं दिये गये। शिक्षा से वह वंचित रहा। और उसकी इच्छा शक्ति को पनपने नहीं दिया गया।"- १

दलितों को लेकर काफी कुछ लिखा गया है और अब भी लिखा जा रहा है। इसे ही 'दलित साहित्य' कहा जाता है। दलित साहित्य दो प्रकार का माना जाता है - पहला है - दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य। दूसरा है - दलितोंद्वारा लिखा गया दलित साहित्य। पहिले प्रकार में दलितों का रचय भोगा हुआ यथार्थ आपत्तियों है। दूसरे प्रकार में दलितों के प्रति संवेदना है। आज लगभग वे तमाम लोग दलित साहित्य लिख रहे हैं जो स्वयं दलित वर्ग के नहीं हैं।

दलित साहित्य का आरंभ मराठी साहित्य में सर्वप्रथम हुआ ऐसा माना जाता है। आज दलित साहित्य का विस्तार हुआ है। भारत की कई भाषाओं में दलित साहित्य लिखा जा रहा है। हिन्दी में दलित साहित्य का आरंभ लगभग ऐसी के दशक से हुआ इसके पहले भी कई विधाओंसे दलित विमर्श के संबंध में लिखा जा चुका था, सर्वप्रथम हिन्दी साहित्यकार मराठी में लिखित दलित साहित्य का अनुवाद हिन्दी में करते थे। जैसे डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे द्वारा अनूदितकृति - यादों के पंछी। छोरा कोल्हाटी का, उचक्का आदि अनूदित कृतीया रही है। धीरे - धीरे हिन्दी साहित्यकार स्वयं मौलिक दलित साहित्य लिखने लगे। इसमें कुछ कहानियाँ एवं आत्मकथापरक उपन्यास लिखे गये। सत्याप्रकाश द्वारा लिखित जस - तस भई सवेर, जयप्रकाश कर्दम का 'छप्पर', ओमप्रकाश वाल्मीकि कृत 'जूठन' तथा मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखा गया 'मुक्तिपर्व' आदि दलित चेतना से युक्त उपन्यास माने जाते हैं। इनमें दलित जीवन का व्रतांत है। उन्हें किस प्रकार से छोटी - छोटी जरूरतों के लिए तरसना पड़ता है इसका मार्मिक चित्रण इसमें प्रस्तुत है। दिन - रात मजदूरी करके भी उन्हें दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती, इस सत्य को इन उपन्यासों में अभिव्यक्त किया गया है। इनमें दलित वर्ग का करुणामय जीवन चित्रित हुआ है।

'मुक्तिपर्व'(प्रकाशन २००२) मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित दलित चेतना से युक्त उपन्यास है। इसमें दलितों को जो प्रताड़ना सहन करनी पड़ती है इसका दर्दनाक वर्णन है। 'मोहनदास नैमिशराय' हिन्दी साहित्य के जाने - माने साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, आत्मकथा आदि विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनके साहित्य में सभ्य समाज के प्रति विद्रोह एवं दलितों के प्रति करुणा दिखाई देती है। 'मुक्तिपर्व' उपन्यास में उनकी दलितों के प्रति संवेदना नजर आती है। इस उपन्यास में दलितों के समग्र जीवन पर प्रकाश डाला गया है। उनके दुःख, दर्द, पीड़ा, संघर्ष आदि को यहाँ चित्रित किया गया है। इसमें दलित परिवार की व्यथा को दर्शाया गया है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'सुनीत' है। वह दलित समाज को सम्मान के साथ जीने की सलाह देता है। इस उपन्यास में आजादी के बाद की दलित वर्ग की स्थिति को उजागर किया गया है। देश आजाद होने के बाद भी दलितों की स्थिति वैसी ही है। उन्हें सवर्ण लोग गुलाम ही मानते हैं। उनसे जी-तोड़ मेहनत कराना, उन्हें छोटे - छोटे एवं गंदे काम लगाना सवर्ण अपनी शान मानते हैं। दलित लोगों को गुलामी सा जीवन मजबूरीवश गुजरना पड़ता है। यदि कोई ऐसे जीवन के प्रति आवाज उठाने का प्रयास करता है तो सवर्णों द्वारा उनकी आवाज बंद कर दी जाती है।

आजादी के बाद भी दलितों में कोई सुधार नहीं हुआ था। उनकी स्थिति वैसी ही बरकरार थी। दलितों को सवर्ण के यहाँ नौकरी करके जीवन गुजारना पड़ता था। दलितों से वे लोग अपने घरों और खेतों में जीतोड़ काम करवाते थे। इतना कम करने के बावजूद भी दलितों को हमेशा अपमान सहना पड़ता था। 'मुक्तिपर्व' उपन्यास का पात्र 'बन्सी' नवाब साहब की हवेली पर काम करता है। उसे वहाँ बहुत ही अमानुष अत्याचार सहना पड़ता है। उसे हमेशा नवाब साहब की डाट-फटकार एवं गाली गलौच खानी पड़ती है। फिर भी वह कुछ भी नहीं कहता। उसे

कोई लेना – देना नहीं हैं। इस अन्याय का सुनीत जैसा दलित युवक विरोध करता हुआ न्मर आता है उसमें दलित समाज को आगे पढाने की धतु है। यही कारण है कि वह दालितों की बस्ती में बच्चों को पाढने का कार्य करता है। वह दलित समाज में बदलाव लाने के लिये लालायित है। अतः प्रस्तुत उपन्यास दालितों के जीवन का उनके संघर्ष विदाह आत्मविश्वास को दर्शाने में सार्थक प्रतीत होता है।

संदर्भ ग्रंथ

१. प्रतियोगिता साहित्य सिरीज – डॉ. अशोक तिवारी
२. मुक्तीपर्व – मोहनदास नैमिशराय – प्रष्ठ २८
३. मुक्तीपर्व – मोहनदास नैमिशराय – प्रष्ठ २८
४. छप्पर – जयप्रकाश कदम – प्रष्ठ ४४
५. मुक्तीपर्व – मोहनदास नैमिशराय – प्रष्ठ ३८
६. मुक्तीपर्व – मोहनदास नैमिशराय – प्रष्ठ ५२

